आरती श्रीसांबाची ८५

जय देव जय देव जय पार्वितरमणा। हर पार्वितरमणा। आरती ओवाळू तुझिया निजचरणा।।ध्रु.।। कर्पुरगौर भुजंगाभरणा त्रिनयना। नंदीवाहन गंगाधर मर्दन मदना। शिव शिव शिव शिव सांबा पातक संहरणा। नीलकंठा स्वामी हे पंचवदना।।१।। रुंडमाळा गळा स्मशानस्थलवासा। त्रिपुरांतक बिल्वप्रिय वैराग्यवेशा। मुसळ तोमर डमरू त्रिशूळ करिं फरशा। धारण भस्म निवारण दुर्धर भवपाशा।।२।। निर्विकार निरंजन निर्गुण सदाशिवा। भालचंद्रा देवा हर हर महादेवा। त्रिविध ताप निवारुनि तारिसि जडजीवा। माणिकदास शरण तुज एक्या भावा।।३।।